Airo International Research Journal
Volume I, ISSN: 2320-3714
Impact Factor 0.75 to 3.19

February, 2013

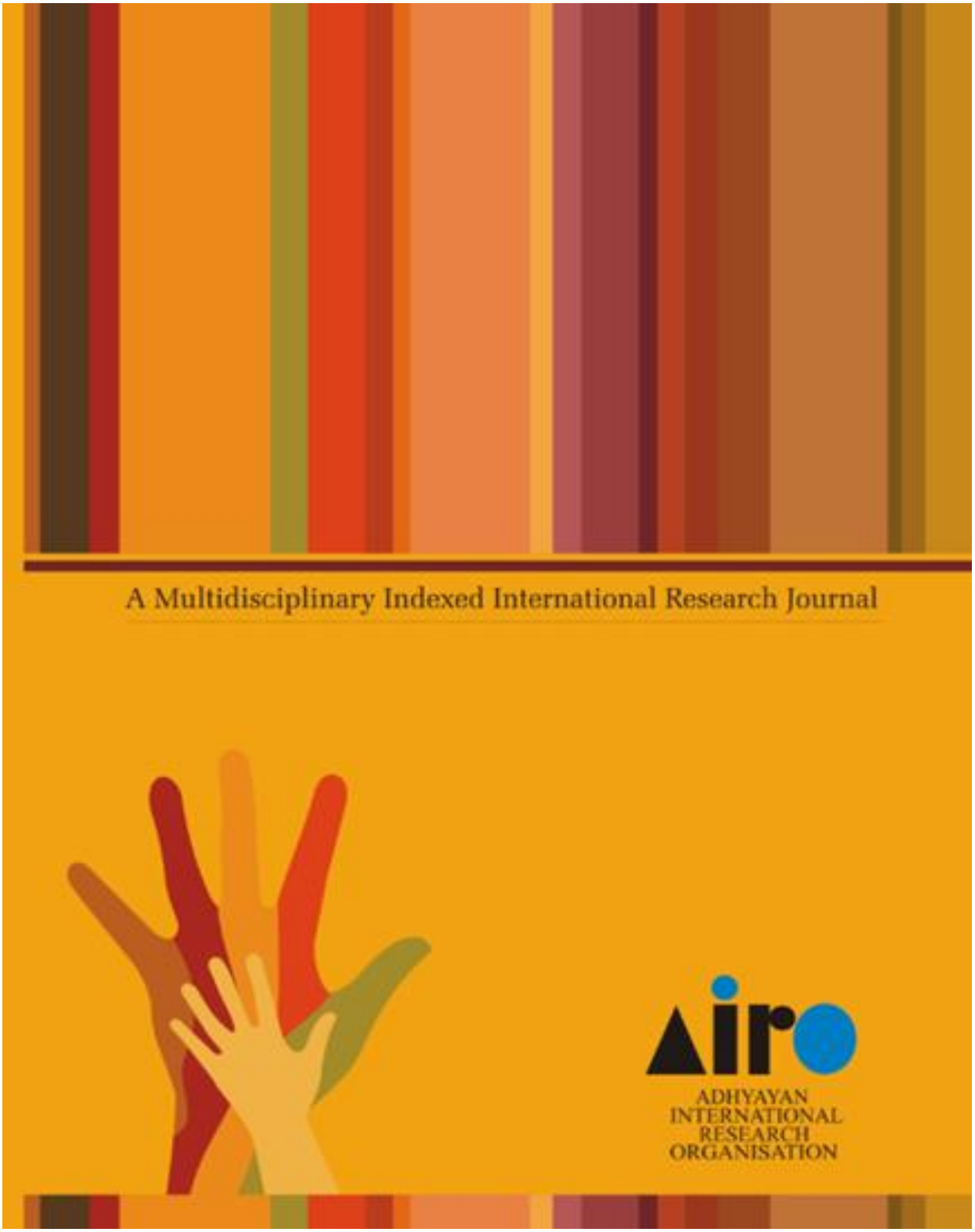

Airo International Research Journal
Volume I, ISSN: 2320-3714
Impact Factor 0.75 to 3.19
February, 2013

# मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में व्यक्तिगत संघर्ष

**कविता चौधरी**

**सहायक प्रोफेसर हिंदी, ऍम ऍम शिक्षण महाविद्यालय, फतेहाबाद**

मैत्रेयी पुष्पा एक हिंदी कथा लेखक है। हिंदी में एक प्रख्यात लेखक, मैत्रेयी पुष्पा उसे क्रेडिट के लिए दस उपन्यास और सात लघु कहानी संग्रह है । मैत्रेयी पुष्पा को हिन्दी अकादमी दिल्ली का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है । इसे हिन्दी की प्रमुख साहित्यकार माना गया है । इन्होने अपने साहित्य मे हर पहलू को लाने का प्रयास किया है । इन्होने अपने उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवाद, ग्रामीण नारी और स्त्री का विरोध स्वर आदि को प्रमुख दिखाया है । मैत्रेयी पुष्पा कहती है कि मुझे "चाक" उपन्यास के लिए खासी बदनामी मिली है लेकिन वहाँ ऊपर से नीचे तक राजनीति में समाये भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई है जो सारंग ने भी लड़ी और श्रीधर ने भी साथ ही गाँव कि तमाम स्त्रियों ने, एकजुट होकर, दुर्भाग्य यह है कि साहित्यक स्त्री पुरुष हमारे लेखन में आयी यौनिकता के आधे पन्ने के साथ जुड़कर वर्षों बिता सकते है जैसे स्त्री द्वारा उठाये गए सारे सरोकार बेमानी होती हो। "

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में एक स्त्री, एक पुरुष के भीतर पुरुषत्व जगाने के लिए देह समर्पण करती है और दूसरे सन्दर्भ में एक स्त्री अपने संघर्ष के सहचर मित्र के घायल होने पर अचानक इस हद तक आसक्ति अनुभव करती है कि उसके प्रति समर्पित हो जाती है । यानी दोनों प्रसंग यौन शुचिता की बनी बनाई धारणा को तोड़ते है। यह दोनों स्त्रियां क्रमश: 'चाक' की कलावती चाची और सारंग है । 'चाक' में एक संवाद है कि

'हमजाट स्त्री बिछुआ अपने जेब में रखती है। जब चाहती है पहन लेती है जब चाहती है उतर देती है'

मैत्रेयी पुष्पा इस संवाद कि बहाने स्त्री में बगवत के बीज बोना चाहती है। बीते कुछ वर्षों में ही मैत्रेयी पुष्पा ने हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किया है। इस उपन्यास में एक बहुत पिछड़े गाँव की स्त्री सारंग व्यक्तिगत संघर्ष में बदलती है और स्त्री की मुक्ति का एक अनोखा दर्शन प्रस्तुत करती है । पुरुष प्रधान सामंती समाज के विरुद्ध खड़े होने पर जो साहस वह दिखाती है वह स्त्री मुक्ति पर नए सामाजिक रक्षण के रूप में देखने लायक है । मैत्रेयी पुष्पा की अंतर्वस्तु बहुत अग्रगामी और क्रांतिकारी नजर आती है। वह 'चाक' उपन्यास के द्वारा ग्रामीण पिछड़े वर्ग की नारी को जीवन

देने की कोशिश करती है । मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में समाज में नारी की देह को लेकर ही उसे महत्व दिया जाता है। नहीं तो स्त्री को कुछ भी दर्जा नहीं दिया जाता । मैत्रेयी पुष्पा का सम्पूर्ण कथा - साहित्य नारी को केंद्र में रखकर उसकी व्यथा - कथा को, पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शोषण को अभिव्यक्त करता हूँ, परन्तु वह कहीं पर एकांकी नहीं दिखाई देता । इन्होने 'चाक' की नायिका सारंग और रेशम को बिना किसी दुराव-छिपाव के विवाहेतर काम-सम्बन्ध को उचित मानकर उसका समर्थन करती हुई दिखाई देती है। 'चाक' उपन्यास नर नारी संबंधों के इर्द-गिर्द ही घूमता है । सारंग नायिका नारी संहिता की समस्त मान्यताओं को चुनौती देती हुई, न केवल श्रीधर से सम्बन्ध स्थापित करती है बल्कि पुरुष सत्ता को चुनौती देने के लिए ग्राम-पंचायत के चुनाव में प्रधान पद के लिए खड़ी हो सकती है। लेखिका ने स्त्री की सत्ता में भागीदारी को आवश्यक मन है। वे मानती है कि जब तक सत्ता स्त्री कि हाथ में नहीं आती, पुरुष समाज द्वारा उसका शोषण और उस पर अत्याचार समाप्त नहीं होंगे । मैत्रेयी पुष्पा केउपन्यास में समकालीन यथार्थ बोध से जुड़कर यह सन्देश दिया है की आधुनिक युग में साहित्य केवल नायक-नायिका के संयोग - वियोग की कहानी ही नहीं सुनते बल्कि जीवन की सर्वांगीण समस्याओंका भी विचार करके उन्हें हल करने का प्रयास करते है।

निष्कर्षः रूप से हम कह सकते है की मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से आधुनिक नारी की नवीन समस्याओं और उलझनों पर ध्यान दिया है । नारी जब परिस्थितिवश अथवा विवशता के कारण अंतद्दों का शिकार बनती है तो उसका व्यक्तित्व बिखरने लगता है। स्वयं वह अपने लिए ही जटील पहेली बन कर रह जाती है, जिसका समाधान वह अपने अंदर या बाहर न पाकर कुंठित हो जाती है और जीवन के वीरान रास्तों पर भटक जाती है। मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य स्त्री-विमर्श की दृष्टि से बहुआयामी है । एक लम्बी स्थापित व्यवस्था को तोड़कर जब-संघर्ष से जुड़ कर कदम-कदम पर यथार्थ से मुठभेड़ करना नारी अस्मिता का तकाजा है। उन्होंने अपने उपन्यास में नर-नारी के काम संबंधों का विविध रंगो में चित्रण किया है।

संबंधों की इस पृष्ठभूमि पर जरूरी नहीं कि बिना विवाह कि स्त्री -पुरुष कि कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकते। अंत: हम कह सकते है कि मैत्रेयी पुष्पा ने नर-नारी के संबंधों को अभिव्यक्त करके समाज का भी परिचय दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्ध और उल्लेखनीय है । भविष्य में भी कथाकार मैत्रेयी पुष्पा से बहुत अपेक्षाएं और संभावनाएं की जा सकती है।

**'चाक' उपन्यास शोध सारांश**

मैत्रेयी पुष्पा अपने निभ्रिक लेखन और बेबाकबानी के लिए जो कभी अपने वैवाहिक जीवन और स्त्री-विमर्शों के लिए अति प्रसिद्ध लेखिका है। वह एक बार जो ठान लेती है, उसे पूरा करती है, चाहे उसका कितना भी विरोध होता रहा। मैत्रेयी पुष्पा का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा है जिसमे बिखराव, गरीबी और टुट का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक संकट, मार्मिक व्यथाएं एंव प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद वे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखिका है। जिसका प्रभाव इनके साहित्य में परिलक्षित होता है। इन्होने अपने साहित्य में स्त्री-विमर्श , नर-नारी सम्बन्ध, सामाजिक यथार्थवाद, शोषण, अत्याचार आदि का खुलकर विरोध किया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का यथार्थवाद स्त्री के संघर्ष को, अधिकारों के लिए लड़ रही जनता के संघर्ष को प्रत्यक्ष करता है। इनके उपन्यासों में स्त्री विमर्श की दृष्टि बहुआयामी है। वह नारी को एक लम्बी स्थापित व्यवस्था को तोड़कर जब संघर्ष से जुड़कर कदम-कदम पर यथार्थ से मुठभेड़ करते हुए दिखाती है। वह अपने उपन्यास वह नर-नारी संबंधों का विश्लेषण करती है। इसीलिए इनके कथा साहित्य में कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्ध और उल्लेखनीय है। मैत्रेयी पुष्पा पहली ऐसी महिला लेखिका मानी जाती है जिसने अपनी कृतियों में गाँव की स्त्री की व्यथा को पूरी गहराई से जाना, समझा और व्यक्त किया।

**सन्दर्भ**

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1997

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' पृ. 28

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' पृ. 29

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' पृ. 36

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' पृ. 211

मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' पृ. 217